**शिक्षा, समाज और राजनीति**

****

**मनुष्य का अस्तित्व समाज से है और समाज का मनुष्य सेI महान दार्शनिक अरस्तु ने कहा है “ जो प्राणी समाज में निवास नहीं करता, वह या तो देवता है या पशुI ” हम सभी समाज में निवास करते हुए परिवार की मूलभूत आवश्यकताएं पूरी करते हैं, जिनमें रोटी, कपड़ा व मकान के साथ-साथ शिक्षा व चिकित्सा भी सम्मिलित हैंI शिक्षा व चिकित्सा की सार्वजनिक व्यवस्था स्थानीय प्रशासन करता हैI प्रशासन को संचालित व नियंत्रित करने के लिए कार्यपालिका की अवधारणा को स्वीकार किया गया हैI कार्यपालिका की शक्ति राजनीति के द्वारा निर्धारित की जाती हैI इस प्रकार शिक्षा, समाज और राजनीति एक दूसरे के अनुपूरक होकर कार्य करते हैंI वर्तमान समय में राजनीति जातिवाद की पराकाष्ठा पर हैI हर जाति राजनीति में अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहती हैI सवर्ण जातियों ने निम्न जातियों सहित अन्य पिछड़ा वर्ग को भी गुमराह कर राजनैतिक वर्चस्व सिद्ध किया हैI सवर्ण जाति के लोग एससी, एसटी व ओबीसी के निष्कपट व भोले-भाले लोगों को षड्यंत्र के तहत आरक्षण व धर्म-कर्म के नाम पर उकसाकर दूसरे जाति व धर्म के लोगों के खिलाफ़ दिलों में नफ़रत पैदा कर देते हैंI इस प्रकार सवर्ण जाति के लोग अपने दिमागी-अस्त्र का उपयोग करके राजनीति व प्रशासन में शीर्ष पदों पर आसीन हो जाते हैंI इस व्यवस्थित क्रीडा के द्वारा अन्य समाजों का कूटनीतिक तरीके से विकास अवरुद्ध किया जाता हैI ऐसे घृणित मानसिकता वाले नेता या अधिकारी उपनाम को दृष्टिगत रखते हुए ही कार्य सम्पादित करते हैंI अगर सवर्ण हुआ तो कार्य अल्पकाल में ही पूरा हो जाता है और अगर असवर्ण हुआ तो उससे या तो रिश्वत की इच्छा रखेगा या उसका कार्य विलम्बित कर देगाI ऐसे में प्रताड़ित बन्धु समय व धन की बर्बादी के बावजूद भी कार्य उचित समय पर पूरा नहीं होने के बाद किसी समाजबन्धु या परिचित को ढूंढने का चिन्तन करता हैI आप सभी समाजबन्धु पाठकों को हकीकत बताना चाहूँगा कि विगत वर्षों में हमने उस तरह के संगठित प्रयास किये ही नहीं, जो हमें सरकारी कार्यालयों की अवांछित प्रताड़ना से बचा सकेI माली समाज की प्रारंभिक अवस्था से ही शिक्षा व राजनीति अशक्त रही हैI इसके मुख्य कारण रहे हैं : अलगावयुक्त नकारात्मक मानसिकता, अहंकार, पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान व आधुनिकतम संचारसाधनों का आभावI**

**अगर पिछले दशकों की बात की जाए तो, माली समाज पर शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव नहीं रहाI अखिल राजस्थान में आज भी समाज का एकीकरण नहीं हो पा रहा हैI समाज विकास के प्रारम्भिक चरण में जो शिक्षित बंधू या राजनेता थे , वो अपने अहंकार या प्रतिष्ठा की वजह से समाज में अपने आप को सच्चा सेवक या हमदर्द के रूप में स्थापित नहीं कर पाए ,इस कारण से समाज में अलगाव व स्वार्थवृत्ति को बढ़ावा मिला I सामाजिक समरसता नहीं होने से हमारे समाज की प्रतिभाएं इच्छित मंजिल तक नहीं पहुँच सकीI यह क्रम उतरोत्तर बढ़ता गया, फलस्वरूप अविकसित अवस्था में होने की वजह से माली समाज का शैक्षिक व राजनैतिक स्तर अशक्त व अक्षम रह गयाI सवर्ण जातियों ने मौके की नजाकत का भरपूर फायदा उठाकर शिक्षा व प्रशासन में मलाईदार पदों पर कब्ज़ा कर लिया I दीर्घावधि तक शक्ति का उपभोग करने से सवर्ण जाति की मानसिकता भौतिक सुखों तक ही सीमित हो गईI असवर्ण जातियों से सेवक का कार्य करवाकर उनको खुश कर देते थे, माली समाज सहित अन्य असवर्ण जातियों को मानसिक गुलाम होने का आदी बना दियाI कुछ हद तक वही क्रम आज भी चल रहा है, लेकिन वर्तमान युवा पीढ़ी उस गलती को सुधारकर आगे बढ़ने को लालायित है I वर्तमान में भी सवर्ण जातियाँ शिक्षा व प्रशासन पर अपना विशेषाधिकार मानते हैंI इन दोनों ही क्षेत्रों में हमारे समाज की तौहीन भी करते हैं, किन्तु मानसिक गुलाम होने के कारण यह बात हमें चुभती नहीं हैI आज भी हमारे ही कुछ समाजबंधु अपने आप को संगठन व पार्टी की परिधि में बांधकर माली-समाज व समाज-एकीकरण को धता बताते हुए विरोध में खड़े हो जाते हैंI ऐसी बात नहीं है कि समाज सुधारक समाज से विरक्त हो गए हैंI वर्तमान में भी महात्मा ज्योतिबा फुले सदृश महापुरुषों की कमी नहीं है, जो छात्रार्थ नि:शुल्क कोचिंग, प्रतिभा सम्मान , कैरियर गाइडेंस,विधवा व वृद्ध महिलाओं की पेंशन इत्यादि कार्य करते हुए सामाजिक समरसता बनाने की कोशिश कर रहे हैं I पूर्वाग्रहयुक्त नकारात्मक सामाजिकता के चलते उनके कार्यों को उचित पहचान नहीं मिल पाती है I**

**हम सभी को गिले शिकवे व समस्त प्रकार के पूर्वाग्रहों को त्यागकर माली समाज की शिक्षा व राजनीति को सशक्त व प्रेरक बनाना होगा I विकास की चमकीली आभा से विरक्त माली समाज के किसान व मजदूर वर्ग के जीवन को वास्तविकता से जोड़ना होगा I समाज को उनके बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी लेनी होगी I ऐसे ही पुनीत कार्यों के द्वारा सामाजिकता सृजित करनी होगी I इस तरह सामाजिक समरसता आने पर परिस्थितिवश पूर्व से नकारात्मक हुए समाजबंधु भी सामंजस्य बिठाकर समाज में मिलन की कोशिश करेंगे I सामाजिक एकता के रहते हुए ही माली समाज अपना अस्तित्व बचा सकता है, नहीं तो सवर्णों के मुंह का निवाला बन जायेंगेI वर्तमान में हमारे समाज के अधिकारियों , राजनेताओं व उत्कृष्ट समाजसेवियों को राजनैतिक विद्वेषता का शिकार बनाया जा रहा हैI हम लोग लाचार व मूकदर्शक होकर इस कुकृत्य को सहन कर रहे हैं, क्योंकि हमारा समाज राजनैतिक रूप से अक्षम हैI समय के आह्वान को स्वीकारते हुए हमें संकल्प लेना ही होगा, कि हमारे समाज के अधिकारियों व राजनेताओं के संरक्षण तथा संवर्धन के लिए आगामी विधानसभा चुनावों में 20+ विधायक भेजकर “मालिराज” को प्रोत्साहन देंगे I हम सभी बंधू स्वस्थ व सकारात्मक मानसिकता के साथ नि:स्वार्थ भाव से समाजसेवा को जीवन का अभिन्न अंग बनाकर “मालिकर्म” कर “मालिनीति” से आगे बढ़ते हुए “मालिधर्म” की स्थापना करेंगे I**

**हम सभी समाजबंधुओं को शांतचित्त व एकसूत्र में बद्ध होकर “ माली-अखण्डता ” की ज्योति जलानी होगी I इसके लिए मैं सभी बंधुओं का आह्वान करता हूँ:-**

**कठिन है राह-गुजर थोड़ी देर साथ चलो,**

**बहुत कड़ा है सफ़र थोड़ी दूर साथ चलो I**

**तमाम उम्र कहाँ कोई साथ देता है ,**

**ये जानता हूँ मगर थोड़ी दूर साथ चलो I**

**नशे में चूर मैं भी तुम्हे भी होश नहीं ,**

**बड़ा मजा हो अगर थोड़ी दूर साथ चलो I**

**ये एक शब की मुलाकात भी गनीमत है ,**

**किसे है कल की खबर थोड़ी दूर साथ चलो I**

****

**मक्खन लाल सैनी**

**( भाषा शिक्षक-संस्कृत)**

**शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार**